## सुखवासी। तसा एकात सुन्धर हे वय जाते अहा हा हा।।

(रागः अल्हैय्या बिलावल - तालः दीपचंदी)
स्मरा हो माणिक मनोहर हा।।धु.।। हेमकटक विवर्त नग जग,
भासवी, पोषवी, लोपवी। अगुण आणि गुण साम्य धरी तो।
माणिक श्री मनोहर हा।।१।। सकल जीव जडाजडात्मक चालवी,
बोलवी, डोलवी भक्तजन सौभाग्य प्रभू तो। माणिक श्री मनोहर
हा।।२।। अचल घन सुख अढळ निजपद, दाखवी, बैसवी,
तोषवी। ज्ञानघन मार्तांड गुरू तो माणिक श्री मनोहर हा।।३।।